4. Harmony in Society (समाज में व्यवस्था)

All pervading harmony – from family to the world family
सार्वभौम व्यवस्था– परिवार से विश्व परिवार तक

Expectation = Value = Human Target –
Right understanding, Prosperity, Fearlessness (Trust), Co-Existence.

Every Individual	Every Family	Society	Nature
अपेक्षा = मूल्य = मानव लक्ष्य – समाधान,	समृद्धि,	अभय (विश्वास),	सहअस्तित्व
हर व्यक्ति में	हर परिवार में	समाज में	प्रकृति में

Ten Steps (दस सोपान) –
Family – Family cluster – Village – Village cluster - - - World Family
परिवार–परिवार समूह–ग्राम–ग्राम समूह – – – विश्व परिवार

Human Order (मानवीय व्यवस्था)
Five Dimensions (**पॉच आयाम**)

1. Education-Sanskar - शिक्षा संस्कार
2. Justice – Protection - न्याय सुरक्षा
3. Health – Sanyam - स्वास्थ्य संयम
4. Production – Work - उत्पादन कार्य
5. Exchange – Storage - विनिमय कोष

1a. Education = To understand harmony at all 6 levels
= To understand the harmony right from self to the whole existence
शिक्षा = छः स्तर पर व्यवस्था को समझना
= स्वयं से लेकर संपूर्ण अस्तित्व की व्यवस्था को समझना

1b. Sanskar = To live in harmony at all 6 levels.
= To live in harmony right from self to the whole existence
संस्कार = छः स्तर पर व्यवस्था में जीना (निष्ठा/तैयारी)
= स्वयं से लेकर संपूर्ण अस्तित्व की व्यवस्था में जीना (निष्ठा/तैयारी)

2a. Justice = 'Human-Human relation' – its recognition, fulfillment, evaluation – leading to mutual Happiness.
न्याय = मानव–मानव संबंध की पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन, उभय सुख।

2b. Protection = 'Human – Rest of nature' relation-its recognition, fulfillment, evaluation-leading to mutual Prosperity.
= Enrichment, Protection, Right Utilisation of nature.
सुरक्षा = मानव–शेष प्रकृति संबंध की पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन, उभयसमृद्धि।
= प्रकृति का संवर्द्धन, संरक्षण, सदुपयोग।

3a. Health (स्वास्थ्य) = 1. The Body acts according to I

2. There is harmony among the parts of the Body

Program (कार्यक्रम)1 Food and upkeep of the body आहार – विहार

2 Labour, Exercise, Aasan, Pranayam श्रम, व्यायाम, आसन, प्राणायाम

3 Medicine, Treatment औषधि, चिकित्सा

3b. Sanyam (संयम) = I, takes the responsibility of nurturing (पोषण), protection (संरक्षण) & proper utilization (सदुपयोग) of Body

↓ ↓ ↓

Food (आहार) Clothing, Shelter (वस्त्र, आवास) Means (साधन)

4b. Work – Labour that human does on the rest of nature

कार्य – मानव द्वारा शेष प्रकृति पर किया गया श्रम

4a. Production- Things obtained out of work

उत्पादन – कार्य से प्राप्त वस्तु

- What to produce? – Physical facilities for nurturing, protection & right utilization of Body.

  क्या ? – शरीर के पोषण, संरक्षण, सदुपयोग के लिए सुविधा

- How to produce? कैसे ?

  -Through Avartansheel Process आवर्तनशील विधि से

  – 1. Cyclic चक्रीय

  2. Every unit is enriched हर इकाई समृद्ध हो

Pollution –

1. Production is such that the object doesn't return to the cycle in the nature

2. Production rate is such that the object returns to the nature at a rate slower than what is there in the nature.

प्रदूषण – 1. उत्पादन ऐसा है कि वस्तु चक्र में वापस नहीं आता।

2. उत्पादन की गति ऐसी है कि वस्तु चक्र में वापस आने में ज्यादा समय लेता है।

5a. Exchange- Exchanging of produce for mutual fulfillment.

(With a view of mutual fulfillment, not MADNESS of profit)

विनिमय – परस्परपूरकता के अर्थ में वस्तु का आदान – प्रदान

(परस्परपूरकता के अर्थ में – लाभ उन्माद के अर्थ में नहीं)

5b. Storage – Storing of produce after fulfillment of needs.

(With a view of right utilization in future, not HOARDING)

कोष – आवश्यकता पूर्ति से शेष वस्तु का संचय

(सदुपयोग के अर्थ में – संग्रह के अर्थ में नहीं)

5. Harmony in Nature (प्रकृति में व्यवस्था)

Expectation: Mutual Fulfillment amongst four orders.

Mutual Fulfillment = relatedness + fulfillment

↓ ↓

परस्पर पूरकता = परस्परता + पूरकता

Four orders (चार अवस्थाएँ)

1. Material Order	पदार्थ अवस्था
2. Pranic Order	प्राण अवस्था
3. Animal Order	जीव अवस्था
4. Human Order	ज्ञान अवस्था

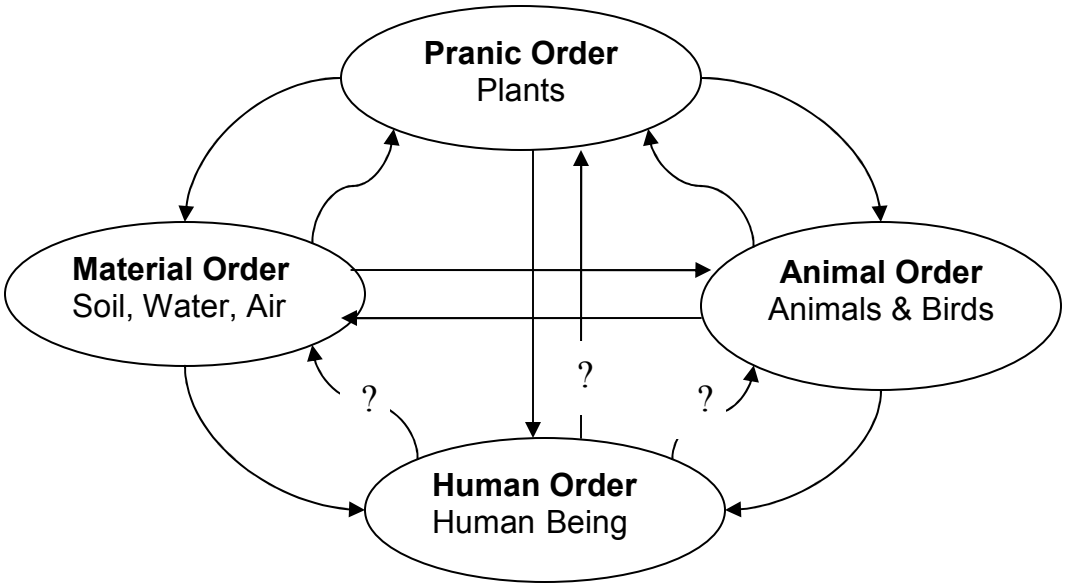

Mutual Fulfillment of Human Order within itself and with other orders?

In nature all the three orders other than human order are mutually fulfilling for themselves as well as others. Only human order has to work to ensure mutual fulfillment.

ORDER अवस्था	**Material** पदार्थ	**Pranic** प्राण	**Animal** जीव	**Human** ज्ञान
THINGS	Soil, Air, Water	Plants, Animal body, Human Body	Animal Body + I	Human Body + I
ACTIVITY	Composition Decomposition	" + Respiration	" + " + Selection in I	" + " + Selection, Thought, Desire in I
DHARMA **धर्म**	Existence अस्तित्व	" + Growth अस्तित्व + पुष्टि	" + " in body + Will to live in I मैं में जीने की आशा	" + " in body + Will to live with happiness in I मैं में सुखपूर्वक जीने की आशा
SWABHAVA **स्वभाव**	Composition Decomposition संधटन – विधटन	Enhance/ Worsen सारक – मारक	" + " in body Wretchedness, Cunningness, Cruelty in I मैं में दीनता हीनता क्रूरता	" + " in body + Poise, Bravery, Generosity in I मैं में धीरता वीरता उदारता
ACTIVITY **क्रिया**	Recognising, Fulfillment पहचानना, निर्वाह करना	Recognising Fulfillment पहचानना, निर्वाह करना	" in body + Assuming, Recognising, Fulfillment in I मैं में मानना, पहचानना, निर्वाह करना	" in body + Knowing, Assuming, Recognising, Fulfillment in I मैं में जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना
INHERITANCE **अनुषंगीयता**	Parinamanusangi परिणामानुसंगी	Bijanusangi बीजानुसंगी	Vanshanusangi वंशानुषंगी	Sanskaranusangi संस्कारानुसंगी

- **Dharma (Characteristic)—**That which is innate to a unit.
  जिसे इकाई ने धारण किया हुआ है।

--Material continues to exist. पदार्थ का अस्तित्व बना रहता है।

(Material is conserved as material. It is neither created nor destroyed. पदार्थ बना रहता है पदार्थ के रूप में। उसकी न तो उत्पत्ति होती है न क्षय होता है।)

-- Pranic order has existence as well as growth.

प्राणावस्था का अस्तित्व बना रहता है तथा पुष्टि होती रहती है।

--Animal body is like plants only. In 'I' there is there is the will to live.

पशु शरीर प्राणावस्था की ही तरह है। मैं में जीने की आशा होती है।

--Human body is like plants ony. In 'I' there the will to live with happiness (knowledge).

मानव शरीर प्राणावस्था की ही तरह है। मैं में सुखपूर्वक (ज्ञानपूर्वक) जीने की आशा होती है।

- **Swabhava (Participation)** –Participation in the harmony at higher level of existence . अपने से बड़ी व्यवस्था में भागीदारी।

With human it means, the feelings which are readily acceptable in participation at higher level of existence.

मनुष्य में स्वभाव का अर्थ है अपने से बड़ी व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में स्वयं में स्वीकृत भाव।

-- By composing, small material structures transform into big structures and by decomposing, big structures transform into small structures. संघटन पूर्वक पदार्थ की छोटी रचनाएँ बड़ी रचनाएँ बनाती हैं और विघटन पूर्वक बड़ी रचनाएँ छोटी रचनाएँ बनाती हैं।

-- A Pranic unit enhances or worsens another pranic unit.प्राणावस्था की एक इकाई दूसरी इकाई का पोषण करती है (सारक) या अवशोषण करती है (मारक)।

-- The swabhava of animal body is same as plants. The swabhava of I is Deenata, Heenata, Krurata.

पशु शरीर का स्वभाव पेड़–पौधों की तरह है। मैं का स्वभाव दीनता, हीनता, क्रूरता है।

Deenata (Wretchedness): The feeling that I cannot fulfill my needs.

Heenata (Cunningness) : " " ", so I go for cheating, manipulation.

Krurata (Cruelty) : " " ", so I go for forceful violence.

दीनता – मैं अपनी आवश्यकता स्वयं पूरी नहीं कर सकता, यह भाव।

हीनता – मैं अपनी आवश्यकता स्वयं पूरी नहीं कर सकता, इसलिए छल का प्रयोग करता हूँ।

क्रूरता – मैं अपनी आवश्यकता स्वयं पूरी नहीं कर सकता, इसलिए बल का प्रयोग करता हूँ।

-- The swabhava of human body is same as plants. For I it is -

Dheerata (Poise): Being assured that the all encompassing solution is to understand and live in harmony at all six levels.

Veerata (Bravery): " " ", and I am ready to help the other getting assured of it.

Udarata (Generosity): " " ", " " ", and I am ready to invest my self, body and wealth to help the other getting assured of it.

धीरता – छः स्तर पर व्यवस्था को समझना, व्यवस्था में जीना ही समाधान है, यह आश्वस्ति।

वीरता – " " ", दूसरे को आश्वस्त करने के प्रति तत्परता।

उदारता – " " ", " " ", इसके लिए अपना तन मन धन लगाने के प्रति तत्परता।

- **Inheritance (अनुषंगीयता) :**

- The material inherits the outcome of physico chemical action.

पदार्थ भौतिक रासायनिक क्रिया के परिणाम का अनुसंगी होते हैं।

- The pranic unit inherits the attributes of seed.

प्राणावस्था की इकाइयॉ बीज की अनुसंगी होती हैं।

- Animals and birds inherit the dynasty (Vansh).

पशु–पक्षी वंश के अनुसंगी होते हैं।

- Human beings inherit the Sanskar.

मनुष्य संस्कार के अनुसंगी होते हैं।

6. HARMONY IN EXISTENCE (*अस्तित्व में व्यवस्था*)

Existence = Exist + Essence, whatever exists.

↓ ↓

to be harmony

अस्तित्व = अस्ति + त्व, जो है।

↓ ↓

होना व्यवस्था

EXISTENCE

Nature प्रकृति	in	Space शून्य
(Collection of Units इकाई समूह)		(Khali Sthan खाली स्थान)
Limited सीमित		Unlimited असीमित
Active क्रियाशील		No activity क्रियाशून्यर
Energized ऊर्जित		Constant energy साम्य ऊर्जा
Recognize and fulfill the relation परस्परता को पहचानती है, निर्वाह करती है		Reflecting,transparent पारदर्शी
Self-Organised नियंत्रित		Self-organization is available नियंत्रण उपलब्ध है
Unit इकाई		Brahma (All pervading)ब्रह्म (व्यापक)
Aishwarya ऐश्वर्य (Abundance with diversity)		Ishwar ईश्वर (All pervading)
I - Nirantar मैं – निरंतर		Nitya नित्य (Unlimited in space & time)
Jarh – Anitya जड – अनित्य		

(Niranatar: Limited in space, unlimited in time, Anitya: Limited in space and time)

Every unit is submerged in space. हर इकाई शून्य में संपृक्त है ⇨

- It is energized in space. (डूबी है)
- It recognizes and fulfills the relationship with others in space. (भींगी है)
- It is self organized in space. (घिरी है)

Ishwar (Space) ईश्वर (शून्य)

- is no activity, is not the doer क्रियाशून्य है, कर्ता नहीं।
- is constant energy, is not omnipotent साम्य ऊर्जा है, सर्वशक्तिमान नहीं।
- is reflecting, transparent, is not the knower. It is the 'I' who can know/ who knows. पारदर्शी है, ज्ञाता नहीं है। मैं ज्ञाता है।
- has self-organization available, is not the organizer or controller. शून्य में नियंत्रण उपलब्ध है, नियंता नहीं है।
- is the basis of Atma to know the entire existence, in this sense it is Paramatma. शून्य अस्तित्व ज्ञान के लिए आत्मा का आधार है, इस अर्थ में परमात्मा है।

God is 'I' with the right understanding. It is a unit and not all pervading.
देवी देवता का अर्थ है समाधानित मैं। ये इकाई हैं व्यापक नहीं।

- Bondage – To live with sorrow. बंधन – दुख पूर्वक जीना।

Salvation – Freedom from sorrow. मोक्ष – दुख से मुक्ति।
Swatantrata – To live with perennial happiness. स्वतंत्रता – निरंतर सुखपूर्वक जीना।

- Theist – One who knows what exists. आस्तिक – जो है, उसको जाानने वाला।

Atheist – One who assumes what doesn't exist. नास्तिक – जो नहीं है, उसको मानने वाला।

- Sin – To live in disharmony. पाप – अव्यवस्था में जीना।

Virtue – To understand and to live in harmony. पुण्य –व्यवस्था को समझना, में जीना।

- Heaven - To live with perennial happiness. स्वर्ग – निरंतर सुखपूर्वक जीना।

Hell - To live with sorrow. नर्क – दुख पूर्वक जीना।

- Death – I leaves the body. मृत्यु – मैं शरीर छोड़ देता है।

Rebirth – I takes another body. पुनर्शरीरयात्रा – मैं पुनः शरीर को चलाता है।

- Presently people are of two types:

SVD^2 - साधन विहीन दुखी दरिद्र
S^2D^2 - साधन संपन्न दुखी दरिद्र
While the natural acceptance is to be S^4- साधन संपन्न सुखी समृद्ध

$SVD^2, S^2D^2 \longrightarrow S^4$